विश्वामित्र सनातन

– शिवसिंह 'सरोज'



'विश्वामित्र सनातन' महाकाव्य श्री शिवसिह 'सरोज' के काव्य-जीवन की अन्तिम कृति है। महर्षि विश्वामित्र ने धनुर्वेद का प्रणयन कर वैदिक भारत को अभिमंत्रित शस्त्रास्त्रों से न केवल सुसज्जित किया वरन् सबसे पहले एक सशक्त राष्ट्रीय सेना को संगठित किया और भगवान श्रीराम के रूप में अपराजेय राष्ट्र नेता प्रदान किया। ऋषि विश्वामित्र ने जन्मना नहीं बल्कि कर्मणा संस्कार का श्रीगणेश कर आर्य समुदाय से जाति भेद मिटाने का प्रयास किया। दास प्रथा समाप्त कर आर्य समुदाय को आत्माभिमानी, ओजस्वी और जागरूक बनाया। अरण्य मंथन से अग्नि का आविष्कार किया और सबसे पहले नदियों में सेतु बनाने का अभियन्त्रण शिल्प विकसित किया।

अतः महर्षि विश्वामित्र के व्यक्तित्व और कृतित्व की अमिट छाप आज भी लोकमानस में अंकित है। 'सरोज' जी की सशक्त लेखनी से 'विश्वामित्र सनातन' महाकाव्य और भी अधिक जीवन्त और प्राणवन्त हो उठा है। रोचकता, प्रवाह और प्रभाव इसके विशिष्ट गुण हैं, जिनके आधार पर पाठक इस कृति से आत्मीयता से जुड़ेंगे और इसका आनन्द लेंगे।